

ASHA ARCH

5. 15. 1924

2716

ASHA ARCH

ACHA ARCH

5 15 53 14

2718

ACHA ARCH

मध्वसधर्मचक्रमङ्गलम् ॥ अथ विधाः
 कृदा ॥ अथावचक्रः ॥ पूर्वमवक्रमाय
 ॥ दानेन ॥ लाक ॥ प ॥ पसे ॥ झा ॥ उ ॥ उ
 विहववड ॥ अथन ॥ स ॥ र्थ ॥ नीमस ॥ व
 न ॥ वायुय ॥ एवमे ॥ ॐ ॥ ने ॥ कु ॥ उ ॥
 वड ॥ ने ॥ उ ॥ य ॥ ला ॥ क ॥ व ॥ न ॥ क ॥ हा ॥ स ॥ अ
 नवड ॥ ने ॥ म ॥ स ॥ म ॥ म ॥ ल ॥ वा ॥ य ॥
 ल ॥ ॐ ॥ म ॥ ने ॥ प ॥ ल ॥ र्थ ॥ नी ॥ लि ॥ द
 र ॥ ना ॥ ध ॥ नि ॥ का ॥ म ॥ न ॥ व ॥ म ॥ नी ॥ म ॥ द ॥ कि ॥ हा
 ला ॥ क ॥ पा ॥ कि ॥ म ॥ झा ॥ उ ॥ उ ॥ कु ॥ वे ॥ वा ॥ उ ॥
 ॥ ध ॥ म ॥ क ॥ स ॥ व ॥ क ॥ म ॥ प ॥ ल ॥ द ॥ ने ॥ नी ॥ ए ॥ वा ॥ अ
 र्थ ॥ द ॥ द ॥ म ॥ द ॥ कि ॥ म ॥ सी ॥ व ॥ म ॥ व ॥ म ॥ प ॥ ल ॥ द ॥ ने
 म ॥ र्थ ॥ वि ॥ ने ॥ ना ॥ म ॥ लि ॥ ध ॥ उ ॥ म ॥ ध ॥ नि ॥ म ॥ कु ॥ हा ॥ प
 ल ॥ द ॥ ने ॥ च ॥ न ॥ व ॥ न ॥ न ॥ का ॥ ल ॥ ॥ उ ॥ कु ॥ व ॥ म ॥
 उ ॥ हा ॥ र्थ ॥ कु ॥ हा ॥ प ॥ ल ॥ द ॥ ने ॥ व ॥ ल ॥ अ ॥ ध ॥
 र्थ ॥ ॥ कु ॥ न ॥ द ॥ र्थ ॥ ॥ प ॥ ल ॥ द ॥ ने ॥ वि ॥ पा ॥ सी

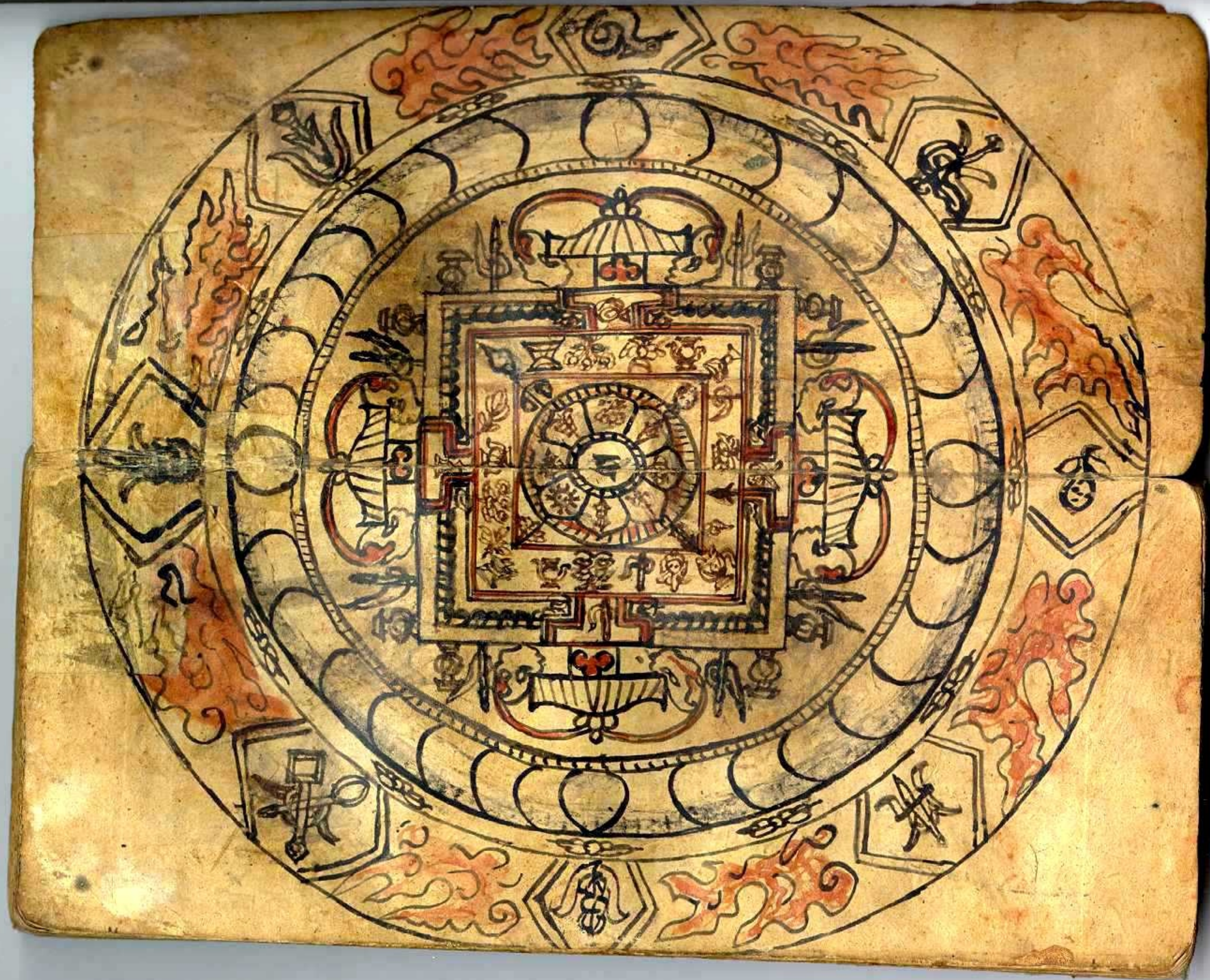
रव ॥ ५ ॥ ल ॥ म ॥ अ ॥ क ॥ हा ॥ पा ॥ हा ॥
 द ॥ य ॥ ल ॥ ल ॥ य ॥ ५ ॥ ॥ प ॥ च ॥ न ॥ क ॥ उ
 का ॥ य ॥ ॥ ला ॥ ले ॥ व ॥ क ॥ न ॥ ल ॥ प ॥ नि ॥ का ॥
 क ॥ र्म ॥ सि ॥ र ॥ वा ॥ ॥ पु ॥ न ॥ रि ॥ ति ॥ नी ॥ ग ॥
 का ॥ न ॥ प ॥ क ॥ हा ॥ कु ॥ उ ॥ ध ॥ र ॥ प ॥ म ॥
 व ॥ लि ॥ व ॥ ज ॥ा ॥ व ॥ लि ॥ ॥ दि ॥ पा ॥ ल ॥ म ॥
 व ॥ स ॥ वे ॥ र ॥ ॥ द ॥ कि ॥ म ॥ उ ॥ म ॥ द ॥ द ॥ म ॥
 प ॥ कि ॥ म ॥ ना ॥ ग ॥ ॥ उ ॥ क ॥ न ॥ म ॥ दि
 सि ॥ ॥ अ ॥ ए ॥ न ॥ म ॥ म ॥ ला ॥ पा ॥ म ॥
 म ॥ ल ॥ म ॥ र ॥ व ॥ मे ॥ वा ॥ य ॥ य ॥ म ॥ ध ॥
 र ॥ ॥ ॐ ॥ म ॥ म ॥ म ॥ ॥ रि ॥ हा ॥ ल ॥ ॥ ॥

अथ मीडलि
 उ ॥ ॐ ॥ प ॥ अ ॥ म ॥
 म ॥ ५ ॥ द ॥ म ॥

म ॥ वा ॥ ने ॥ म ॥

म ॥ हा

कु ॥ प ॥ र ॥
 वि ॥ ० ॥ न ॥
 ल ॥ न ॥ (म)



समाधि

[illegible]

ॐ हं अं हं अं ॥ ० ॥



निल ॥

ॐ गुरुवक्तुसमयहं ॥



शुक्ल ॥

ॐ वक्तुनाकारहं अं
विद्यमां ॥ ० ॥



ॐ इहृहृ ॥ ० ॥



पित ॥

ॐ वक्तुनालाधना
कारहं ॥ ० ॥



शुक्ल ॥

ॐ वक्तुनादहृयनमथ
रुक्मिणहृहृ ॥ ० ॥



शुक्ल ॥

ॐ वरुण निवन्ध सर्व वि
घ्नार्हः ॥ ० ॥



रक्त ॥

ॐ वरुण दुष्काम हर वरुण
सर्वान् स्वाहाः ॥ ० ॥



पित्त ॥

ॐ वरुण १ ह्रूं रुद्र ॥ ० ॥



निल ॥

ॐ वरुण यक्र ह्रूं ॥ ० ॥



निल ॥

ॐ वरुण वन्ध ह्रूं ॥ ० ॥



पीत ॥

ॐ वरुण या ह्रूं ॥ ० ॥



नील ॥

ॐ वरुणधकः यमं गिति ध
दः॥ ० ॥



नील ॥

ॐ वरुणकाल्याणवादि स
वन्धुभिः वरुणकाल्याणम
दः॥ ० ॥



निल ॥

ॐ वरुणसिखनवृद्धम
दः॥ ० ॥



पित ॥

ॐ हूं वरुणकर्मा ॥ ० ॥



विश्व ॥

ॐ वरुणकावधहं ॥ ॥



नील ॥

ॐ वरुणवन्धवः ॥ ० ॥



पित ॥

ॐ सुखं मदा मूख स्वाहा
॥ ० ॥



ॐ वज्रयक्रुह धरुं ॥ ० ॥



ॐ वज्रधनः रुनदह
यथमथ रुं धरुं ॥



ॐ वज्रयथा स्वाहा ॥ ० ॥



ॐ वज्रधय स्वाहा ॥ ० ॥



ॐ वज्रदिय स्वाहा ॥ ० ॥



ॐ वरुणांघ्रि स्वाहा ॥ ० ॥



पित ॥

ॐ वरुणेय स्वाहा ॥ ० ॥



पित ॥

ॐ वरुणविभव रुचक
हूं ॥ ० ॥



भुक्त ॥

ॐ वरुणांकुशः ॥ ॥



पित

ॐ वरुणयादकिं ॥ ० ॥



निल

ॐ वरुणरुगवः ॥ ० ॥



भुक्त ॥

उं वजां व्याहाः ॥ ० ॥



पीत ॥

दह्यदुर्गमियस्वधनः सधुलं कृत्वाः स्वदयहं काव
मधसस्त्रया कर्त्तव्यं नः ॥ **॥ रावना ॥** सधुलमध्याम
कमधः पूर्ववज्रयाधिः दक्षिणवज्रउष्ट्रिखः यश्चिम
होस्वचक्रवर्त्तिः उरुनविशउष्ट्रिखः अलननजात्रासिः
नेनितविध्वंशकः वायुविविकिनिधिः ॥ **॥** न्यासिना
नयनः चक्रवानवजांकुक्षदिः काधस्वध्यादिदवना
यविहिताः यनसमयहास्वहानसस्ववाहर्धं ॥ **॥ उंसा**
कमधययवलसस्त्रावायः यायं अर्थी आचमनः याक्रम

मधुलमध्याम

पृष्ठ २७

धैयनिष्ठस्त्राहाः ॥ **॥ ययन्याम ॥** ॥ उं मन्य २ सहा मूनस्त्राहा ॥ उं **॥** कमधः
स्त्राहा ॥ उं वज्रउष्ट्रिखायहं ॥ उं नलनउष्ट्रिखायहं ॥ उं यमउष्ट्रिखायहं ॥ उं वि
ध्वउष्ट्रिखायहं ॥ उं नजात्रासिधहं ॥ उं वज्रविध्वसिनहं ॥ उं वज्रविकिनिनीहं
॥ उं सिनामयनहं ॥ ॥ उं वज्रलासहं ॥ उं वज्रमाल्यगौ ॥ उं वज्रगिनहिं ॥ उं वः
ऊनीतं अ ॥ ॥ उं मेतिस्त्रननायस्त्राहा ॥ उं अमायदधन्यस्त्राहा ॥ उं सर्वयायीऊह
स्त्राहा ॥ उं सर्वस्वकं नमाद्यानधमस्त्राहा ॥ उं गन्धहस्तिनहं ॥ उं सूरंगमहं ॥ उं गगः
धगं ऊहं ॥ उं हानकयहं ॥ उं अमनयहं ॥ उं चन्द्रयहं ॥ उं रुद्रयालहं ॥ उं का
लनीयहं ॥ उं वज्रगर्तहं ॥ उं अक्रयमतिहं ॥ उं यगिरानकूठहं ॥ उं समनकर

ॐ हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥
 ॐ हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥
 ॐ हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥
 ॐ हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥
 ॐ हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥ उवजयय हूं ॥

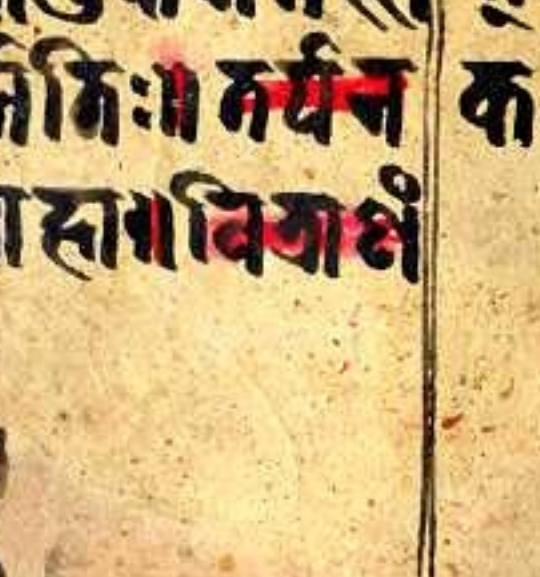
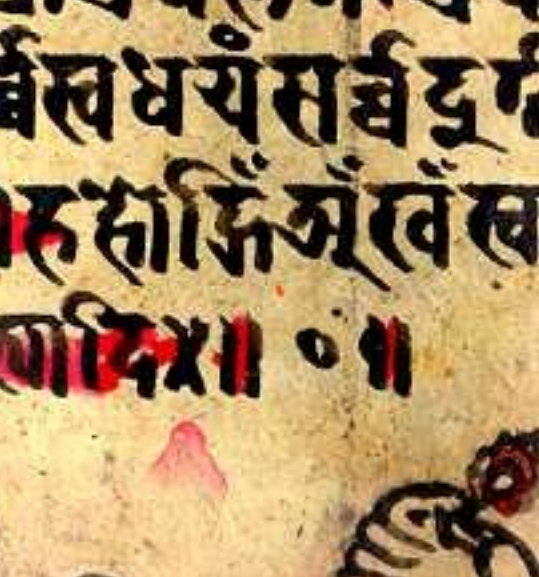


भक्त

पित ॥

रक्त

ॐ सर्वविदं कुनिमजः ॥



विश्व ॥

पित ॥

भक्त ॥

ॐ सर्वविदं कुनिमजः ॥

ॐ नमो साकसिंहाय धर्मच
 कं यवर्तनः यथा कुकुरात्स
 र्वस्य धर्मं सर्वदुर्गतिः ॥ नमः
 ॥ हस्तं ज्ञेयं स्वाहा ॥ विना
 र्थादि ॥ ० ॥

ॐ सर्वविदं कुनिमजः ॥
 नमो साकसिंहाय धर्मच
 कं यवर्तनः यथा कुकुरात्स
 र्वस्य धर्मं सर्वदुर्गतिः ॥ नमः
 ॥ हस्तं ज्ञेयं स्वाहा ॥ विना
 र्थादि ॥ ० ॥

पुनः

मनुचन्द्रयामिकुर्या
कः॥०॥



तथा॥ सर्वसन्निवधवज्रं क
लियसादिननःपूर्वव्यादिसि
यनामदनध॥ उंसर्वकथागन
युजायस्वनायात्मानं धिर्न्या
कयामि॥ सर्वकथागनवज्रस
त्तुअधिमिष्टमीः॥०॥



शुक्ल॥

तथेवस्त्रालयवज्रं कलि
हृदिकृत्वाः दक्षिणव्यादि
सिललाकनरुमिष्टीसध
यममधुलं॥ उंसर्वक
थागनयुजारिधकायात्मा
ननिर्न्याकयामि॥ उंसर्वकथागन
वलाहि
विचमीः॥



शुक्ल॥

तथेवस्त्रालयवज्रं कलिवंधनःसिन्न
यश्चिमदिसिमुखधरुमिष्टधयनामध
उंसर्वविनयुजायवरुनायात्मानं निर्न्या
कयामि॥ उंसर्वकथागनधर्मयवरुयमी
॥०॥



शुक्ल॥

तथेवध्वरिक्तवज्रं कलिसिलसाव
नायहृदिस्था नवध्यादिमंडासूनिष्ट
सधयनामदनन॥ उंसर्वविनयुजा
कर्मननात्मानं धिर्न्याकयामि॥ उंसर्व
कथागनवज्रकरामीः॥०॥ ॥०॥



शुक्ल॥

ॐ समन्ताह नरु मा दक्षसूदिशुः सर्ववृद्धवाधिसत्त्वाः सर्वगन्थागतः वज्रसमिधय
 द्रः कर्मीकुलावस्तिनाश्चः सर्वमूद्रामलुविश्यादवनाधौचः अहंमन्त्रकनामादक्ष
 सूदिशुः सर्ववृद्धवाधिसत्त्वानीयुनक्तः सर्वगन्थागतः वज्रयाधियद्रकर्मकुला
 वस्तिनानीः सर्वमूद्रामलुविश्यादवनानीचयुनक्तः सर्वयाययानिदक्षयामिः वि
 रुद्रदक्षसूदिशुः अग्निनागागन्धुख्ययन्नाधौः अहोखचक्रधुः सर्ववृद्धवाधि
 सत्त्वानां यत्यकवृद्धार्थः आवकसंभगानानीः संभयानियन्नाधौः सर्वसत्त्वनिकाया
 नांः सर्वयुंनमन्मादयामिः दक्षसूदिशुः सर्ववृद्धारुगावनाः युवर्तुधर्मीचक्रः
 युवर्तुनायः दक्षसूदिशुः सर्ववृद्धानीरुगावन्तः ॥ यन्निनिर्वीलुः कामनायाचः यन्नि

शिर्वीनायः ॥ ० ॥ ॐ ॥
 ॐ सर्वविश्वयुजामघस
 मद्रुद्रनसमयहः ॥ ० ॥



शुक्र ॥

ॐ सर्वविश्वयुजामघस
 मद्रुद्रनसमयहः ॥ ० ॥



रक्त ॥

ॐ सर्वदालाकः युजामघ
 मद्रुद्रनसमयहः ॥ ० ॥



रक्त ॥

ॐ सर्वविघ्नोन्मूलकः यजाम
घसमृद्धरुवनः समयहः
॥ ० ॥



शुक्र ॥

ॐ सर्वविघ्नोन्मूलकः लंकाल
यजामघः समृद्धरुवनः
समयहः ॥ ० ॥



पित ॥

ॐ सर्वविघ्नोन्मूलकः लास्य
निकाकासोषायजामघः
समृद्धरुवनः समयहः ॥ ० ॥



रक्त ॥

ॐ सर्वविघ्नोन्मूलकः वरु
यजामघसमृद्धरुवनः
समयहः ॥ ० ॥



पित ॥

ॐ सर्वविघ्नोन्मूलकः यजामघ
समृद्धरुवनः समयहः
॥ ० ॥



नील ॥

ॐ सर्वविघ्नोन्मूलकः लावजा
दानयात्रमियजामघः
समृद्धरुवनः समयहः ॥ ० ॥



शुक्र ॥

ॐ सर्वविद् नुरु नमहा वा ॐ सर्वविद् नुरु नमहा वा ॐ सर्वविद् संसा नयनी खाग
 आहानः सिलया लमितायु धिकां मिया नमितायुजा नुरु नमहा विर्यया नमिताः
 कामय समुद्र रुवननः सम मेयः समुद्र रुवनन समयहं युजा मय समुद्र रुवनन सम
 यहुः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



पित ॥



रक्त ॥



विश्व ॥

ॐ सर्वविद् नुरु नमो अवि ॐ सर्वविद् नुरु नमो अवि ॐ सर्वविद् नुरु नमो अवि
 हा नयानमिताः युजा ॐ नयानमिताः युजा ॐ नयानमिताः युजा
 मय समुद्र रुवननः समयः मय समुद्र रुवनन समयः मय समुद्र रुवनन समयः
 रुः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



विश्व ॥



पित ॥



शुक्र ॥

ॐ सर्वविद् सर्वायाय गं
विना स नीवज गं दायया
लमिना पूजा भय समुद्र
नन समय हूँ ॥ ० ॥



पित ॥

ॐ सर्वविद् काय निधीन
नयुजा भय समुद्र नन
समय हूँ ॥ ० ॥



शुक्ल ॥

ॐ सर्वविद् वाक निधीन
युजा भय समुद्र नन
समय हूँ ॥ ० ॥



रक्त ॥

ॐ सर्वविद् विरु निधीन
नयुजा भय समुद्र
नन समय हूँ ॥ ० ॥



नील ॥

ॐ सर्वविद् गुक् निधीन
नयुजा भय समुद्र नन
समय हूँ ॥ ० ॥



पित ॥

आत्मानं सर्ववृद्धवाधिस
ल्लेखाः निधीनया मिः सर्व
दाः सर्वकालः युनिगुक्तु
मीः महाकावृधिका नाथा
महासमयसिद्धिचनः यय
क्तुः नचकृष्णमलीः सर्व
सत्यसाधनधकर्तृयः अन
नकृष्णलनसर्वसत्ताः सर्व

लाकिकः लाका नववियतिः विगताः रुवन्तुः सर्वलाकिकः लाका नवः समति
 धर्मनिताश्चः सहैव सख्यनः सहैव स्वमधसनः बुद्धारुवन्तु नवात्माः ॥ अनध
 चाहं कुसलनकर्मनाः रुव्ययुवधधविननलाकः दहानधर्माः ऊगताहि
 नायः भाचयसत्तावरुदः खपिदितात् ॥ इतिमूनरुवायासकैवात्मीः नथाहं
 यविधमयः सम्वलंगुजीयात् ॥ उत्थादयामिः यवर्मवाधिविर्लमनूतवः यथ
 त्रियं धकानाथाः ॥ सर्वधोक्तनिष्ठयः ॥ त्रिधंतिनः हिष्पीचः कृष्टालधर्महाग्रहं
 सत्त्वार्थकियाहिर्नचः पुतिगृह्णामिर्मदृधः ॥ वृधधर्मसंघः ॥ त्रिबलप्रमनूत
 आचार्यः ॥ गृहिष्यामिः महावज्रः कुवाचयः ॥ वरुदानप्रदास्यामिः पत्तुत्वादुदि

(हादिनः महाबलः कुलजागः समयः ॥ म(हावमः ॥ ४६॥ धर्मः पुतिगृह्णामिः वाध
 त्रियानिकैः महापदः कुलसूतः महावाधिसमूहः सम्वलं सर्वमैशकैः पुतिगृह्ण
 मिः सर्वतः ॥ पूजाकर्मः ऊथासूक्ताः महाकर्मः कुवाचयः उत्थादयामिपवर्मवा
 धिवीरुः मन्तवः गृहितः सम्वलंकुसपूः सर्वसत्त्वार्थकावधत् ॥ अतिर्धः नायि
 ष्यामिः अमूकाः भाचयाग्रहः अनात्वाः स्वार्तनं स्वाहाः यिष्यामिः सर्वसत्त्वानकृ
 पयिष्यामिनृहता ॥ ॥ कमलावरुपुर्वकः कलप्रधानिः विम्वादिः जागतामृजाः
 वैधपुर्वकः सर्वश्रुतिस्थितः ॥ ॥ ॥

१ॐ सर्वविघ्नः (हमधनं २२
सर्वपापाद्यपनयहं ४॥



रक्त ॥

१ॐ सर्वविघ्नः सर्वपापवि
(हमधनिकं ४ रुद्र ॥



पित्त ॥

१ॐ सर्वविघ्नः प्रोक्तं रुद्र
हं ॥



रक्त ॥

१ॐ सर्वविघ्नः सर्वावनघावी
(हमधनं मू ४ रुद्र ४॥



शुक्ल ॥

नमपश्चात्तुयागित्याहृदयम्
(धः अकारं धः चन्द्रमधुर्लः
नम्यापनीः ॐ मू (हमधनं महाम्
(हमधनं ४॥



नील ॥

१ॐ तमासवदुर्गतिपविस्वध
नवाजाय नमः गताया अर्ह
नमस्य कंबुदाय नमः ॐ
(हमधनं शं विस्वध (हमधनं
पवि (हमधनं (हमधनं विष्णुः
सर्वकर्मातवननविष्णुः स्वाहा ४॥



पित्त ॥

उत्तमकुनसर्वइर्गतिपनिहामधनमधुलपनीतीष्यन्नरुवति। तथावर्जाकुहामधेना
कृष्णप्रवहामवद। हामकमने। आकाशमधुलषपूजा। पूष्यत्याह। हृदयमधुलीतिय
र्षयत्॥ हृदयमधुलरुवकुनीष्यन्नया। गुरुत्वा। समयमवदवता। पविपुर्ध्वरुव
ति। तत्तमधुलमध्वचक्रवर्हिबुप। मात्मानतावयत्। हामकर्मिहंतावयत्॥ तथा
दहादिकुर्वलोकधातु। धादहा। ह्यतामधिमच्य। ह्यताहंकारं। आत्मानयहध
गु। तथाहंकारं धनिष्यन्न। वज्रतवायमधुली। तस्यापचिलेकालतामिमधुली। त
स्यापचिवेकावधमहादधि। तस्यापचिकेकावध। काकेनपदतमधुली। तस्मध्वहं
महं॥ हीततह। मवचवसु। चतुवत्तमयं। सर्ववत्तवि। रुषिर्गनीष्याय॥ उंवज

हटा मरुवसर्वीतस्वारा॥ उंवजकर्मक॥ उंवहंकारं धाहं॥ उंवजवध्वर्व॥ उं
वजानन। हनदहपथमथरुजतहं॥ उंवजचक्रहं॥ तस्यापचिवजहं। रुःकर्म
मृदया। रुकावसितनीष्यन्नः। नलहोषवकृतीग। न। चतुनसु। चतुहाव। चतु
नगावध। रुषित॥ चतु४का। (ध)पूजावतियह। सधिवृ॥ चडाह्वजविहृती। हा
बाह्वहाववचित॥ चतुस्सुर्वसमाहका। पदह। हधमरुषिर्गनी॥ अणकवमधुलीम
स्यान। चक्रवजावलितह। तहधताहापचिमिहासनी। तस्यापचिवत्तमधुली।
क्रास्यावमध्वपु। चत्तमधुली। दवताह्वानी। वाधमधुलस्य। दवताह्वानीपदि
काया॥ अस्याविंमतिचत्तमधुलीपदधत॥ मिहासनापचिवधुमल। अकावा

दिककाशं कुनः प्रक्षपायस्वनूपदविह्वीतं ॥ ॥ ततः स्वकायमृद्धिद्विह्वकसिं
 ह ॥ रुदिवज्रपिषः नलातनलोपिषः क (६४) पश्रापिषः कायवीस्वर्षीषः पृष्ट
 तजपिषः कनदयाधजपिषः वकंरुलतिमि पूपिषः ह्वकसिंहतजापिषः या
 नननालच्छापिषः लास्यावजपिषः स्पवाम ॥ मालावलापिषः स्पवाम ॥ गिता
 पश्रापिषः स्पवाम ॥ नृत्ताविष्पिषः स्पवाम ॥ वशीषधूपामिबहोपूष्पाच रुदि
 पा ॥ रुताकनगंधाचिद्वाम ॥ वजीकुहादकिहान ॥ वजपाहावामा नो वज्रमहा
 टदकिनर्जया ॥ वजावहावामर्जय ॥ पादहावाधिसत्वभामकूपष ॥ आस्तावन
 कसमादिसमापन्न ॥ वाधिचिह्नस्वनूपत ॥ सर्वसत्त्वार्थं हं दुर्मपन्न ॥ धर्मदुनूप

हवति ॥ ॥ ॐ मू (१२) महामू (१२) स्वाहा ४ ॥

ॐ नजउफिषदं ॥



शुक्ल ॥

ॐ धजउफिषदं ॥



नील ॥

ॐ तपउफिषदं ॥



श्याम ॥

ॐ कप्रउष्टिषदं ॥



स्वाम ॥

ॐ वजाउष्टिषदं ॥



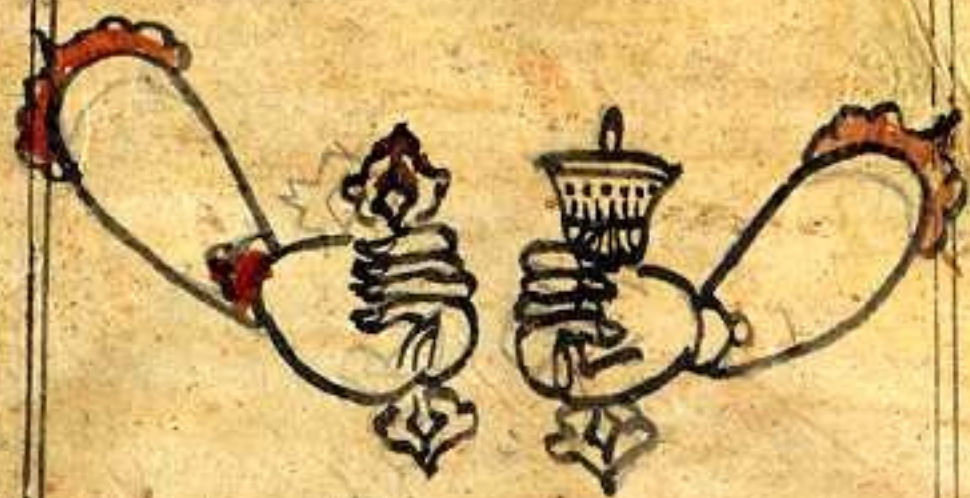
नील ॥

ॐ वलउष्टिषदं ॥



पित ॥

ॐ पद्माउष्टिषदं ॥



रक्त ॥

ॐ विस्रउष्टिषदं ॥



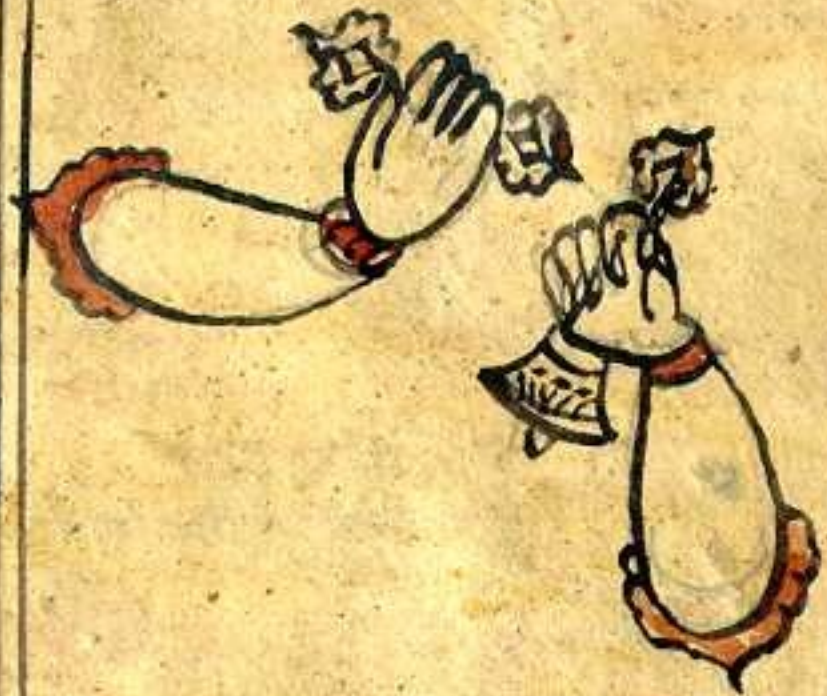
श्याम ॥

ॐ वज्रलाउष्टिषदं ॥



थल ॥

ॐ वज्रमालाहं ४॥



श्वेत ॥

ॐ वज्रगिताहं ४॥



पित ॥

ॐ वज्रवृत्ताहं ४॥



रक्त ॥

ॐ वज्रपूष्पाहं ४॥



शुक्ल ॥

ॐ वज्रधूपाहं ४॥



शुक्ल ॥

ॐ वज्रदिपाहं ४॥



पित ॥

ASHA ARCHIVES

2716

ॐ वज्रगन्धाई ॥



विश्व ॥

ॐ भद्रिह वरायद् ॥



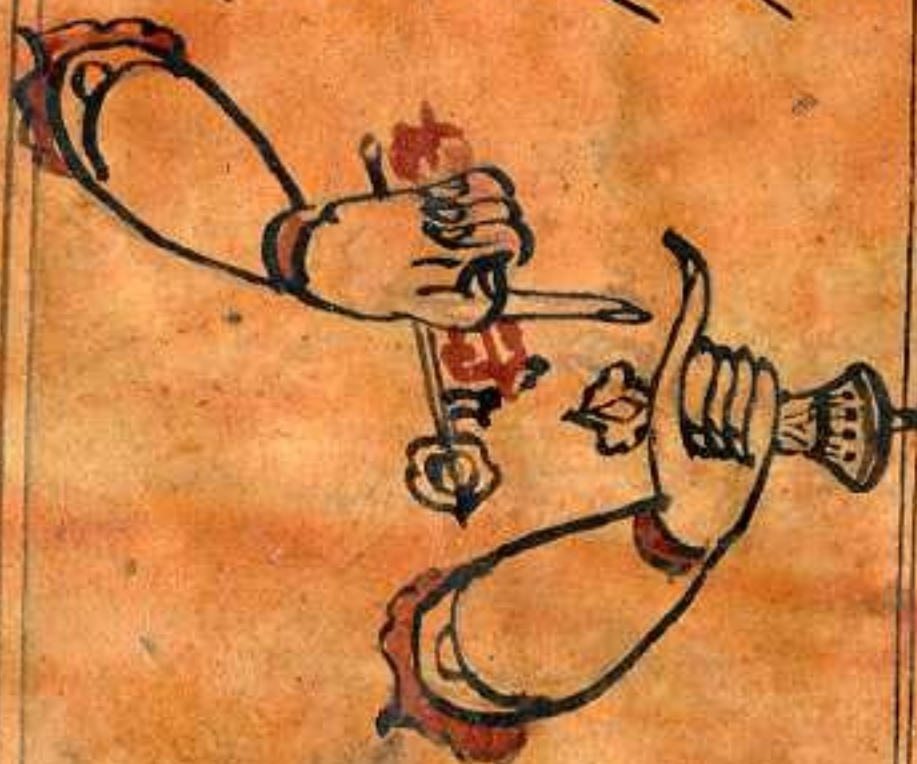
पित ॥

ॐ अमाद्यादर्हा नाई ॥



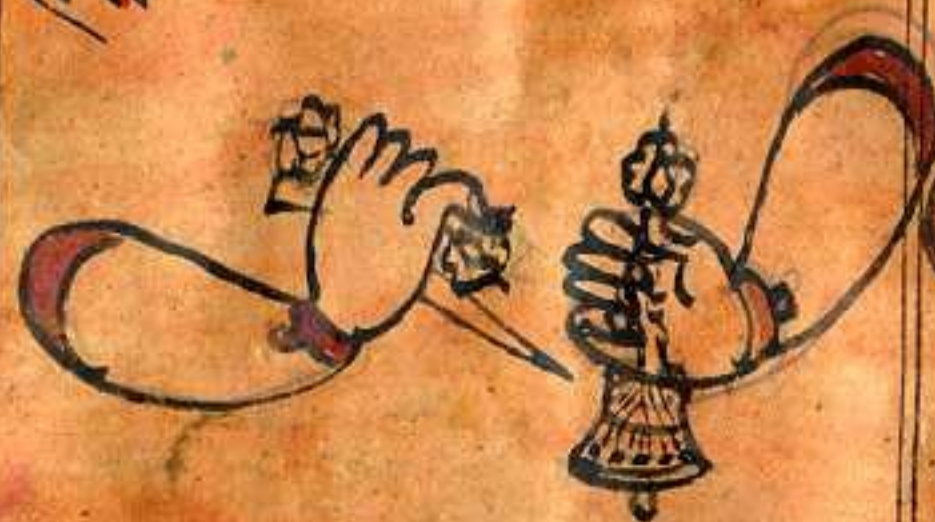
पित ॥

ॐ सर्वपापजहाई ॥



शुक्ल ॥

ॐ सर्वस्वकलमाद्यादनमस्तु ॥



पित ॥

ॐ गन्धहस्तिहाई ॥



श्याम ॥

ॐ सनगम्यहं ॥



श्वेत ॥

ॐ गगनगंगाहं ॥



पित्त ॥

ॐ ह्यनककुचहं ॥



नील ॥

ॐ अमृतप्रताहं ॥



सित ॥

ॐ चन्द्रप्रताहं ॥



स्वत ॥

ॐ हृदयामहं ॥



रक्त ॥



ॐ भालनीप्रहादं ॥



रक्त ॥

ॐ वज्रगहादं ॥



नील ॥

ॐ अजयमतिदं ॥



शुक्ल ॥

ॐ प्रतिमानकृतादं ॥



निल ॥

ॐ समन्तरडादं ॥



पित ॥

ॐ वजाकुहादं ॥



शुक्ल ॥

ॐ वज्रपादाहं ॥



निल ॥

ॐ वज्रमहाहं ॥



शक्त ॥

ॐ वज्रावहं ॥



विश्व ॥

१ अलिषकं त्यादि ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं मूनितामा
चार्यं गुरुवस्व ॥



पित

१ ॐ नमो भगवतेः सर्वदुर्गतिपनी स्वधनं वा जायतथा
गताया अहं न समं वृद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं
विह्वधनविह्वः सर्वकर्मो सर्वावचनविशोधनस्वा
हा ॥ ॥ ॐ नमस्तु साकसिंहायः धर्मचक्रप्रवर्तक
॥ तेषां दुर्गजगत्सर्वं धर्मं सर्वदुर्गति ॥ ॐ नमस्तु
ऊर्ध्वपायः धर्मधनुस्वतावतः सर्वसत्त्वहितार्थाय ॥
तत्त्वप्रवहक ॥ ॐ नमस्तु चक्रोर्ध्वपायः समता
ततातावते ॥ तेषां दुर्गतिं सर्वं महिष्यकप्रदायक

ॐ नमस्तुति श्रुत प्रियः कृष्णपदः ॥ इत्येव च नन्दनिष्ठं चतुर्मासं वल्लभं सत्त्वानां धिप्रपन्नं ॥
 ॥ ॐ नमस्तु पद्मदक्षिणायः स्वरावप्रत्यवेककः ॥ आस्वासयैति सत्त्वेषु धर्मा मृतप
 वषट्ते ॥ ॐ नमस्तु विस्वदक्षिणायः स्वरावकृतमनूहितः विस्वकर्मकचाङ्घ्रीसत्त्वा
 नीदुःखमाकलय ॥ ॐ नमस्तु तद्गुदक्षिणायः तेषां तु कर्मणा प्रकः सर्वसत्त्वेषु आर्येषु
 सत्त्वहत्वा कचिष्यति ॥ ॐ नमस्तु धृजदक्षिणायः चिकामनिध्वङ्गधर्मा दानतनसर्वस
 त्वानां सर्वासां पविप्रचयत् ॥ ॐ नमस्तु च्छुदक्षिणायः आनयच्छुद्रमाहितः तेषां तु
 कर्मजगत्सर्वधर्मनाशत्वे प्राप्यते ॥ ॐ लास्यामालान्धगिताः नृत्त्या देवा इव दुःखयः
 धूपाच्च पुष्पाच्च दिपाच्च गन्धादधीतमास्तुते ॥ ॐ द्वालयन्ध्रान्धिताः इवः अंकुहापा
 सस्तुट्कृतमस्तु ॥ ॐ धीयतावतिजार्तः दालपालनमस्तुते ॥ ॐ दिकालोहितताः

च चत्वारिधा न पातः मृदिता दोदहासिताः वाधिसत्त्वतमस्तुते ॥ ॐ बुद्धिः क्रोडो बुद्धि
 पिन्दा इव लोकपाला चतुर्दिर्गः अग्निबाहुसः वायु इव तूताधिपतिरमस्तुते ॥ अने
 न क्षीरचाङ्गनः सस्तु मूलमधुलागनः वज्रघट्टाध्वजामन्त्राः ॥ ॐ देवी प्रसूदा हरेत् ॥
 ॐ वज्रवाच ॥ ॐ तर्कैर्जहन्तर्कैः ॐ वज्रसत्त्वसमयः प्रादिः ॥ पदात्मदहेषु आत्ममधुलक
 कृदा ॥



पदात्मदहेषु आत्ममधुलक
 लययत् ॥ ॐ वरावयत्मा तवेष्ट
 मधुलं आदियागतः ॥ इति
 आदियागताम समादि ॥ प्रथ
 मः ॥ पूर्ववत् ॥ ॐ हस्तमय

पुवलसत्कावायपाद्यादिभ्रं सर्वविनवजलास्यहं॥
 धींआचमनंप्राकुमनंप्रतिक
 स्वाहा॥पुष्पन्याहा॥मधुलस
 स्वावाये॥पंचापहानपूजाया
 य॥भृशलाहाकार्य॥ ॥

ॐ सर्वविनवजमालां॥



पित्त

पित्त

ॐ सर्वविनवजगितकीं॥

ॐ सर्वविनवजनृत्पभ्र॥

ॐ सर्वविनवजपुष्पहं॥



निल



रत्न



निल

ॐ सर्वविभवकृष्णाय नमः



ॐ सर्वविभवस्तुति ॥



ॐ सर्वविभवजगन्मयम् ॥



१४६६ वादक्षुत्तिः ॥ ॥



ॐ नमो मा कर्मिहायः ॥ आदि ॥ म नुतर्प्यत ॥ विग्राहीत्या
दि ॥ ॥ ॐ निजधर्माद्यादि ॥ पूर्ववत् ॥ आ पा पू पी
ली ॥ धर्मगर्पार्था ॥ हृ हृ य या ग ॥ वलिता वना ॥ ॥ ॐ ह्रीं
आचमनं प्रतिच्छेदाहो ॥ ततार्यका वनवायुमधुलैः त
इ पचिर्नका वन ॥ अग्निमधुलैः चकृत् ॥ पचिर्नका व
द्यः ॥ इयमं जात च्चिकायाः ॥ उ पचि आकाशैः बृहत् ॥ हृता
मोहनः ॥ तद्रहका चिपचिपूचिर्नः ॥ वं ॥ ओं ॥ ह्रीं ॥ खं ॥ हूं ॥ लूं ॥
मां ॥ पो ॥ नौ ॥ जं ॥ काचं जातः ॥ दधिष्ठितः ॥ पंचामृतपंचपधिप

वृषं हृती लं कदाप्यपचिनतः कंका बर्जं शुक्रवज्रवीलिया मृति
 हृती पालमे हृमः दीदिपमार्तवितावः ॥ तद्विचिं कान्नतः च
 त्रमधुलं ववितावः ॥ तस्याचन्द्रमधुलिः जातश्चक्रवर्त्यः ॥
 चित्तवर्धिमहिः दक्षादिगर्वाहृतीः देवदेवीनीः आतियसफकि
 चसमूहः स्युः मृतमातियतः त्रैवसम्पादयन् ॥ तत्राश्चक्रना
 तीवज्रवन्दमधुलं च ॥ तत्रैववीलितवलाव्यतः त्रिचिचनः श्रीती
 वाचानीः अधिनिष्ठः ॥ ॥ तत्रालोकपालामुद्रायर्धयन् ॥ ॥

१ उं नमवजस्यदिहिं श्वज
 पाछाचनं रेखाहा ॥



रक्त ॥

उं अतयश्च क्काकपिलकल १ उं यमाय स्वाहा ॥
 उं हरेमिषिभावः लालवीच
 पाऊ स्वाहा ॥



पित्त



निल ॥

उं सर्वरुतयैकचक्र
 कन स्वाहा ॥



कुंक ॥

ॐ हृत्पञ्चहृत्सिधिरावि
नपाङ्क स्वाहा ४॥



ह्रित

ॐ स्वमखाखिषुखस्वाहा ॥



चित

ॐ कृववायस्वाहा ४॥



एत

ॐ शंशंशिवस्वाहा ॥



ह्याम

ॐ उर्ध्ववक्त्रतस्वाहा ४॥



चित

ॐ सूर्याग्रहाधिपतयस्वाहा ॥



ह्रित

ॐ चन्दानक्राधिपतयस्व ॐ अर्द्धपृथिवस्वाहा ॥
हा ४॥



ॐ नागस्य स्वाहा ॥



थनवलि सखा न वाय ॥ दह लोक पा ला नी ॥ थनवलि मा
ला ॥ ॥ इ देवा स जामर्वत जंगमिर्हा सा सा सपुर्हा कट
पूतना ह्व गन्धर्व यज्ञाग्रह जातय ह्व जकचित्त ह मोतिव
मैती दिव्या ॥ न्यत्यषु ज्ञान पृथिवित बहू कृता ऊँ लि स
विहाय यामि सपुत्र दावा मरुह त्यमै धे ॥ ॥ हा कु
न ग्रहार्थ यम वृष्टी तीव सक्ति हता जत न न च म न च
यव यवा दया त न विमलु ल च न ग न षु सर्व षु च यव सक्ति
सवी षु सर्व षु व स ग म षु च त्वालय वापि कृता धिवा मा वा

पिबदागपूचः यत्तलपूः कूपपूः स्वरपूः महादधिपूः ग्रामपूः
 धामपूः निमः पूः देवादिवासः सकानः धापूः धुन्यालयः
 देवगृहपूः तपूः विहानचैत्याचः धाथाधुमपूः पथपूः माचाः
 मचकंज्ञानाः यत्तलपूः गृहवसनपूः सविताचः चत्त
 लपूः यत्तलपूः महापथः महाधामपूः महावनपूः
 सिंहादिचिक्काः धूपितपूः यत्तलपूः यत्तलपूः यत्तलपूः यत्तलपूः
 पपूः दिव्याचक्रतालपूः मन्त्रपूः नित्यमन्त्रियचः रुद्र
 प्रसन्नाः धुन्यालयः धूपितपूः धूपितपूः धूपितपूः धूपितपूः
 रुद्रियवैकुण्ठदीः दचकर्मसहस्रं शरीरुत्वाहाः पंचायतलपूः
 धादहालाहः ॥ ॥

१५ वीं ताहं ४ ॥



निल ॥

१५ वीं ताहं ४ ॥



पित ॥

१५ मन्त्रज्ञाहं ४ ॥



इपाम ॥

१५ कृष्णाहं ४ ॥



पित ॥

१५ं कीडाहुं ४॥ पित
उं निमिलाहुं १॥ श्याम



खें न

१५ं हलाहुं ४॥



पित ॥

१५ं मृदगाहुं ४॥



शुक्र ॥

१५ं पटहाहुं ४॥



पित ॥

१५ं गुंजाहुं ४॥



निल ॥

१५ं निमिलौहुं ४॥



श्याम ॥

अष्टादशः॥

वज्रहं हट ॥ ॐ सर्वकर्मवचनानीकस्मिन्कवृद्धहृद ॥ ॐ कृ विना सयाववनानीकहृद ॥
 ॐ कृ विना सयाववनातिहृद ॥ ॐ हल शं धक शं हन शं वचनधतिहृद ॥ ॐ सच शं प्रस
 नावचनधतिहृद ॥ ॐ हत शं सर्वावचनानीकहृद ॥ ॐ सर्वावचनधनीहृद यदहृद ॥ ॐ
 हट शं सर्वावचनानीकहृद ॥ ॐ चिन्म शं सर्वावचनातिहृद ॥ ॐ हत शं सर्वतनकगतिहृद
 तुनहृद ॥ ॐ पच शं सर्वप्रतगतिहृद तुनहृद ॥ ॐ मथ शं सर्वतिर्य्यगतितनहृद ॥ ॐ
 सर्वपापगतीवधनाहानीहृद ॥ ॐ सर्वपापविह्वधनीधम शं प्रय शं हृद ॥ ॐ सर्वइर्ग
 तिबिह्वधनीपुष्पावीलाकिनीहृद ॥ ॐ सर्वपापविस्वधनीहानविलाकिनीहृद ॥
 ॐ सर्वपापगतिवधनासहिहृद ॥ ॐ सर्वतनकगत्याकर्षनीहृद ॥ ॐ सर्वतनकाइर्ग

अस्मिन् रावना ॥ १ ॥

विनी कुरु ॥ ३ सर्व पापवन्धनासिनीवी हवधनी कुरु ॥ ३ सर्व पापगतिग्रहणी
नासिनी कुरु ॥ ॐ नमः ॥ ॥ कुरु लोखनय ॥ ३ सर्व इति त्यादि ॥ ॥ इति नय ॥ कुरु
होत्यादि ॥ ॥ धलितय ॥ ३ अमी धीः त्यादि ॥ ॥ पंचामृत पंचगव्यः पंचगव्यः ॥ घडा कुरु ॥
३ चले २ त्यादि ॥ ॥ दं काला कुरु ॥ ॥ स्वर्गातय ॥ ३ अमृत २ त्यादि ॥ ॥ गत्यादकन स्वायाली
खनय ॥ ३ पुष्ट २ त्यादि ॥ ॥ पुष्टादक द्वा हा लस्वीयाली खनय ॥ ३ पक्ष २ त्यादि ॥ ॥ ॐ नमः
॥ ॥ मधुलम स्वानत स्यात्तावध ॥ तता मधुलम मधुमा कुरुनी त्यादि ॥ ॥ आया पुष्टी
पी सुति ॥ ॥ पुष्ट्यास ॥ ३ मृत्यु २ महा मृत्यु त्यादि ॥ ॥ अस्मिन् रावनातन स्यात्ताव
ना ॥ ३ वज्र कुरु कुरु पञ्चासुति पन अस्मिन् मधुला पञ्चि ॥ ॥ कुरुनी पुष्टी का हा नहिमध

अस्मिन् रावना ॥ २ ॥

समय हा त्वनी स्मार्थावर्जा कुरु ॥ ३ हान सत्व मावाहन विहाय ॥ ० ॥ ॥ धूप तिला
जत ॥ ॥ जर्म गली मकल सत्व हित व तस्य ॥ सर्वोत्तम कस्य बल धर्म कलाधिपतस्य
नी स्पष्टा रविचिह्नस्य सर्वोत्तम कस्य तर्मी गली तव कुपच माहि खके ॥ ॥ कुरु लोख ॥
त्यादि मकती तालय कुरु ॥ ॥ यर्मी गली मचतना मच पुडितस्य धर्म स्यत हा नहि अ
वृत्त जलोक कय प्रनी हित स्यति वात्मकस्य तर्मी गली तव वृत्त पच माहि खके ॥ ॥ यर्मी
गली प्रवल धर्म व तस्य नी ली सत्व नी कस्य हित व ध्वव च स्यति सत्व प्रका नचित
स ॥ मर्मी गली सतर्मी गली तव कुपच माहि खके ॥ ॥ ॥ पुष्ट अस्मिन् रावनातय ॥
३ मृ ॥ २ महा मृ ॥ ३ स्वाहा ॥ ॥ तता मृत कवा हकास्ति त लोकापाला न धर्म चत ॥

रुद्रधनकं दव बाजी चामलम हकं वृक्षाधारव भव नी विष्णु हति पाथकं ही क न डो
 वाहिकं क्रिया काल जम कल मध नै व नृही पाति सुवाध नीन वदित क कला डधनी ने
 मल प्रता पध नै वाय अस्या ह्यः सर्वा देवा मु नादि तस्य मृतक म मय क्क वीधिया धन ग
 ग धन धि मे च्य ४॥ ॥ विधि र्थ पूजा याय ॥ पूष न्यास ॥ ० ॥ ॐ मृत्य २ म हा मु धा
 त्यादि २ ॥ पी ली पी दु ॥ ॐ ह म क म न य दु रु द ॥ य ध म्मा अंका न म्ख त्यादि २ ॥ ० ॥
 ॥ ० ॥ ॥ न ड प्रवाहन विधि ॥ ति र्थ मः तति डी ग्वल रं पू ष माल रं तय ताग आवाह
 न ॥ गु न्म धु ल धु न का डी ॥ स्वा न त म्पी हो व ना ॥ डी म ति रि हु म्का न क नी वि ह्वी ता ड
 क र्क का या म ध्य व ड व नृही पूर्व द न अ न क नी ल द डि हा प र्मी प ह्वि म न ड क र्क

ड रु नै वा हु कि ॥ ॐ सा न म हा प य अ न म र्ख पाल की ने म ल क र्क ट क वायु व क
 लि क व हि ह्वः सर्वा ता ग नौ वि चि त्प ॥ धू प ० ॥ त्या दि पू जा या य ॥ ॥ पू ष न्या स ॥
 डी व ड व नृ ध य स्वा हा ॥ डी अ न का य स्वा हा ॥ डी प द्मा य स्वा हा ॥ डी म ड का य स्वा
 हा ॥ डी वा म्की य स्वा हा ॥ डी म र्ख पाला य स्वा हा ॥ डी क र्क ट का य स्वा हा ॥ डी क लिका
 य स्वा हा ॥ डी म हा प द्मा य स्वा हा ॥ पी चो प हल पू जा या य ॥ ॥ अ र्घ्य ॥ ॐ अ न क
 वा म्की त रु क क र्क ट क प य म हा प य म र्ख पाल क लिक व नृ धा पाल दे व ति म हा
 दे व ति स्व म सि धि द धु ध न अप बाल दू न २ न दा प न दो मा ग व म हा मा ग न अ न क
 त फ म हा त फ धी का ति म हा का ति धु न प त डा दि क म हा द न हि वि २ म हा सि

शृंगत्यासः

१४ मृद्वैमहासूत्रेऽहमकमुक्षयस्याह॥

३ बिंदा ।

१॥ ओं व सो ड षि षाय हु ॥ रु दय

१५० नलडष्टि बाथदुं॥ कपाल

१५० पयोउषि स्वाथइ॥ कथ

१३० विह्वडि बायडुंग नृग

॥ डांगडाडिषायद ॥ लिङ्गल

१। षोडशविधसिद्धीष्टदे॥ लाहाणा २

१॥ दावदाविकिबिनी अदं ॥ रद्दाल

१५॥ हितात पञ्चदं ॥ लिङ्गदं

१ डावड लासदं ॥ नृगः दण

२॥ ब्रह्मो ले ना॥ कपाल दण्ड

१। अब इति नं इति ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

१५० बद्धतु सुअ ॥ नृग दे पा

१ प्रोवदपृष्णदु॥ द्विल

१। वज्रवृषा ॥ अक

१॥ शिवदा वंशोक्तिः ॥ प्रवा

॥ सावित्री गायत्री ॥

१। वडा कडा ४॥ नमः ३५

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१२६

धनमण्डलसमुत्पत्ता ॥ मण्डलभावनास्वानतस्य ॥ ॥ तस्यापरिवचहेतुक
 तुकर्ममुद्रायां भुकारमितनिस्पन्तः वज्रमणिरात्र शृङ्खलकुटांगारः चतुरश्र
 चतुर्धोरः चतुर्गोराभास्वितः चतुष्कोनेषु सर्वदारेषु निर्यूहसन्धिषु चद्रार्क
 वज्रचिह्नितः हासार्द्रहालललितं चतुसुत्रसमायुक्तं षट्मुद्रामनुष्ठितं ॥ अत्य
 तमण्डलमध्यारचक्रं वज्रावलिपरिगतं तस्य नाभोपरि सिंहाशनं ॥ तस्योप
 रि चन्द्रमण्डलं चक्राकारमध्यषु चन्द्रमण्डलं देवतास्थानं ॥ वाक्पमण्डलस्य दे
 वतास्थानं पट्टिकायां अष्टाविंशति चन्द्रमण्डलं पश्येता ॥ सिंहासनोपरि चन्द्र
 मण्डलं अकारादिः ककारक्षरपहोपायस्वरूपद्विविभूतं स्थानकसमाधिसमा

पन्नो बोधिचित्स्वरूपेन सत्त्वार्थहेतुसम्यक्त्रमण्डलरूपं भवति ततः मण्डल
 मध्यचक्रवर्तिरूपमात्मानं शाक्यसिंहं विभावेयत् ॥ ॥ ॥

